ASTRO ARPITA NATH

कुंडली में गजकेसरी योग: अर्थ, निर्माण, फल और दुष्प्रभाव

Arpita Nath द्वारा · योग, दोष एवं मिलान · 2026-10-05

वैदिक ज्योतिष (Jyotish) में, **गजकेसरी योग (Gajakesari Yoga)** को सबसे शुभ और सम्मानित ग्रहीय योगों (शुभ योग) में से एक माना जाता है। यह नाम अपने आप में एक कहानी कहता है: 'गज' का अर्थ है हाथी (जो ज्ञान, शक्ति, धैर्य और गरिमा का प्रतीक है), और 'केसरी' का अर्थ है सिंह यानी शेर (जो साहस, राजसी अधिकार और निडरता का प्रतीक है)।

जब यह योग जन्म कुंडली (Kundli) में उपस्थित और प्रभावशाली होता है, तो यह जातक को इन दोनों जीवों के राजसी गुणों का आशीर्वाद देता है: गहन बुद्धि, सामाजिक मान-सम्मान, स्थायी धन और एक अटूट आत्मबल।

गजकेसरी योग कैसे बनता है?

शास्त्रीय वैदिक ग्रंथों के अनुसार, गजकेसरी योग दो सौम्य और शुभ नैसर्गिक शुभ ग्रहों: बृहस्पति (गुरु) और चंद्रमा के बीच एक विशेष कोणीय संबंध से बनता है।

• **मूल नियम:** गजकेसरी योग तब बनता है जब गुरु चंद्रमा से केंद्र भाव (केन्द्र) में स्थित हों।

• इसका अर्थ यह है कि जन्म कुंडली के चंद्र राशि से सीधे गणना करने पर गुरु 1ले, 4थे, 7वें या 10वें भाव में होने चाहिए।

• कुछ परंपराओं के अनुसार, यदि गुरु लग्न से केंद्र (1ले, 4थे, 7वें या 10वें) भाव में हों और उन पर किसी पीड़ित रहित चंद्रमा की दृष्टि हो या वे चंद्रमा के साथ युति में हों, तो भी यह एक समान, अत्यंत शुभ गजकेसरी प्रभाव उत्पन्न करता है।

सकारात्मक प्रभाव और वास्तविक जीवन की भविष्यवाणियाँ

जब गजकेसरी योग निर्बाध रूप से कार्य करता है, तो यह व्यक्ति को उसकी परिस्थितियों से ऊपर उठा देता है:

• **तीक्ष्ण बुद्धि और विवेक:** जातक के पास असाधारण निर्णय क्षमता, दार्शनिक परिपक्वता और स्वाभाविक विद्वता होती है।

• **प्रतिष्ठा और सम्मान:** भले ही व्यक्ति किसी कुलीन परिवार में न जन्मा हो, फिर भी उसे अपने परिवार, कार्यस्थल और समाज में स्वाभाविक सम्मान प्राप्त होता है।

• **वित्तीय सुरक्षा:** यद्यपि यह हमेशा रातों-रात लॉटरी से अमीर बनने की गारंटी नहीं देता, लेकिन यह एक स्थिर और स्थायी वित्तीय आधार तैयार करता है जो जातक को जीवन भर सहज और सुरक्षित रखता है।

• **प्रभावशाली और सम्मोहक वाणी:** मन (चंद्रमा) दैवीय नैतिकता और ज्ञान (बृहस्पति) द्वारा निर्देशित होता है, जिससे जातक एक प्रभावशाली वक्ता, सलाहकार या परामर्शदाता बनता है।

• **बाधाओं पर विजय:** जिस प्रकार एक हाथी बिना विचलित हुए जंगल से गुजर जाता है, उसी प्रकार स्पष्ट गजकेसरी योग वाले लोग भावनात्मक लचीलापन बनाए रखते हैं और जीवन के तूफानों को शांतिपूर्वक पार कर जाते हैं।

आपको सर्वोत्तम परिणाम कब मिलते हैं?

इस संयोजन वाली हर कुंडली को राजसी समृद्धि प्राप्त नहीं होती है। गजकेसरी योग को अपनी उच्चतम क्षमता प्रदान करने के लिए, कई प्रमुख स्थितियों का अनुकूल होना आवश्यक है:

1. दोनों ग्रह मजबूत स्थिति (गरिमा) में हों:

• बृहस्पति कर्क राशि में उच्च का हो, अपनी स्वराशि (धनु, मीन) में हो या मित्र राशियों (मेष, सिंह, वृश्चिक) में हो।
• चंद्रमा बली हो, अधिमानतः शुक्ल पक्ष का चंद्रमा हो या अपनी स्वराशि/उच्च राशि (वृषभ या कर्क) में हो।

2. शुभ भावों में स्थित हों:
• यह योग तब सबसे अच्छा काम करता है जब दोनों ग्रह लग्न से केंद्र (पहले, चौथे, सातवें, दसवें) या त्रिकोण (पांचवें, नौवें) भाव में स्थित हों।
• प्रथम भाव में बनने वाला गजकेसरी योग चरित्र और स्वास्थ्य का वरदान देता है; चौथे भाव में घरेलू सुख और अचल संपत्ति; नौवें भाव में उच्च ज्ञान और भाग्य; तथा दसवें भाव में व्यापक व्यावसायिक ख्याति प्रदान करता है।

3. दशा अवधियों में सक्रिय होना:
• सबसे अधिक परिवर्तनकारी परिणाम बृहस्पति और चंद्रमा की महादशा या अंतर्दशा के दौरान सामने आते हैं।

4. नवमांश (D9) में सहयोग:
• यदि D9 चार्ट में बृहस्पति और चंद्रमा दोनों बल, मित्र राशि या वर्गोत्तम स्थिति बनाए रखते हैं, तो यह योग परिपक्व वयस्कता में स्थायी परिणाम प्रदान करता है।

आपको इसके परिणाम कब नहीं मिलते? (दुष्प्रभाव एवं भंग)

चंद्रमा से केंद्र में गुरु के होने के बावजूद जातक को विशेष प्रसिद्धि या धन का अनुभव न होना एक आम बात है। ऐसा तब होता है जब यह योग दुष्प्रभावों (भंग या दोष) से पीड़ित हो:

1. दुस्थान भावों (6ठे, 8वें या 12वें) में स्थिति:
• यदि यह संयोजन लग्न से 6ठे (विवाद/ऋण), 8वें (अचानक संकट/बाधाएं), या 12वें (हानि/अलगाव) भाव में पड़ता है, तो सांसारिक समृद्धि प्रदान करने की इसकी क्षमता अत्यधिक सीमित हो जाती है, और इसके परिणाम अंतर्मुखी या आध्यात्मिक गतिविधियों की ओर मुड़ जाते हैं।

2. किसी भी ग्रह की नीच स्थिति:
• यदि गुरु मकर राशि में बिना किसी वैध निरस्तीकरण (नीच भंग) के नीच का हो, या चंद्रमा वृश्चिक राशि में नीच का हो, तो यह योग अपनी मूलभूत शक्ति खो देता है।

3. सूर्य द्वारा अस्त होना:
• यदि गुरु सूर्य के अत्यधिक निकट स्थित हो (अस्त हो), तो सौभाग्य प्रदान करने की उसकी स्वतंत्र शक्ति क्षीण हो जाती है।

4. नैसर्गिक पाप ग्रहों के साथ निकट युति:
• यदि राहु गुरु के साथ जुड़ता है (गुरु चांडाल योग बनाता है), तो शुद्ध ज्ञान अशांत या अपरंपरागत हो जाता है।
• यदि केतु या शनि चंद्रमा अथवा गुरु के साथ घनिष्ठ रूप से (3–5 अंश के भीतर) स्थित हों, तो यह भावनात्मक उदासी, झिझक और आत्म-संदेह पैदा करता है जो इस योग के फलों में देरी करता है या उन्हें दबा देता है।

5. क्षीण, निर्बल चंद्रमा:
• सूर्य के अत्यधिक निकट एक अत्यंत अंधकारमय चंद्रमा (अमावस्या) में गुरु की विस्तृत कृपा को पूरी तरह से प्रतिबिंबित करने की जीवंतता का अभाव होता है।

अपनी कुंडली में गजकेसरी योग का आंकलन करने के लिए संक्षिप्त चेकलिस्ट

1. क्या आपकी कुंडली में चंद्रमा से गिनने पर बृहस्पति (गुरु) 1st, 4th, 7th या 10th भाव में स्थित हैं?

2. क्या आपका चंद्रमा शुक्ल पक्ष का (बलि) और अनुकूल स्थिति में है या वह कमजोर और कृष्ण पक्ष का (क्षीण) है?

3. क्या बृहस्पति और चंद्रमा राहु, केतु या शनि के घनिष्ठ अशुभ प्रभावों से मुक्त हैं?

4. क्या वे लग्न से त्रिक भावों (6th, 8th और 12th भाव) के बाहर स्थित हैं?

यदि यह योग स्पष्ट और भली-भांति समर्थित है, तो आपके पास ज्ञान और गरिमा की एक सुरक्षात्मक ढाल होती है, जो जीवन के महत्वपूर्ण पड़ावों को पार करते समय सदैव आपका मार्गदर्शन करती है।

---

https://astroarpitanath.com/hindi/gajakesari-yoga/
ज्योतिष केवल मार्गदर्शन के लिए प्रदान किया जाता है। जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए, कृपया किसी योग्य पेशेवर से परामर्श लें।